विषय– नैतिक, योग, खेल एवं शारीरिक शिक्षा

(कक्षा–11)

पूर्णांक–50 अंक

इस विषय की लिखित परीक्षा में एक प्रश्न–पत्र तीन घण्टे तथा 50 अंकों का होगा, इसके साथ ही 50 अंकों की प्रयोगात्मक परीक्षा भी होगी। लिखित एवं प्रयोगात्मक में उत्तीर्ण होने के लिये विद्यार्थी को 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य है। इस विषय के प्राप्तांकों का योग, श्रेणी निर्धारण में नहीं किया जायेगा। व्यक्तिगत परीक्षार्थियों की खेल एवं शारीरिक शिक्षा की परीक्षा अग्रसारण/पंजीकरण अधिकारी द्वारा ली जायेगी।

उद्देश्य–

1–बालकों का सर्वांगीण विकास एवं गुणों का उन्नयन।

2–छात्रों में स्वयं उत्तरदायित्व वहन, समय पालन एवं स्वस्थ नेतृत्व शक्ति का विकास।

3–सुदृढ शरीर का निर्माण करने हेतु शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं की अभिवृद्धि।

4–सहयोग, सहिष्णुता तथा विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास।

5–छात्रों में भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग, राष्ट्रीय एकता एवं देशभक्ति की भावना का विकास।

6–भावी जीवन में जीविका के लिये तैयार करना।

नैतिक,खेल एवं शारीरिक शिक्षा **30 अंक**

इकाई–1–नैतिकता के मूल तत्व– **05 अंक**

नैतिकता का तात्पर्य तथा स्वरूप, महत्व, परिवार, समाज राष्ट्र एवं विश्व के सन्दर्भ में नैतिकता के आधार पर सत्य, अहिंसा, प्रेम, ईमानदारी, स्वतंत्र चिंतन, आत्मसंयम, सहिष्णुता, परोपकार तथा सह.अस्तित्व आदि के व्यावहारिक पक्ष।

इकाई–2–परिवार तथा समाज– **04 अंक**

परिवार के प्रति कर्तव्य विशेषकर परिवार में रहने वाले वरिष्ठ नागरिकों– दादा.दादी, नाना.नानी अथवा अभिभावकों के प्रति अधिक जागरूक एवं संवेदनशील रहना। माता.पिता एवं वरिष्ठ नागरिक भरण.पोषण कल्याण कानून 2007 का संक्षिप्त ज्ञान। पारस्परिक संबंधों की रक्षा एवं निर्वाह, समाजसेवा का महत्व, अंध विश्वास एवं रूढ़ियों का उन्मूलन, सामाजिक दोषों का निराकरण, धूम्रपान, मद्यपान, दहेज, अशिक्षा, पारिवारिक उत्पीड़न तथा जाति.प्रथा।

इकाई–3–नागरिकता एवं भावनात्मक एकता– **03 अंक**

नागरिकता का अर्थ, परिभाषा, नागरिक के कर्तव्य, परिवार एवं समाज के प्रति शिष्टाचार, विश्व.बन्धुत्व, सर्व धर्म.समभाव।

इकाई–4– **03 अंक**

गुरू–शिष्य सम्बन्ध, वर्तमान शैक्षिक परिवेश में तनाव के कारण एवं निवारण।

इकाई–5–पर्यावरण, सुरक्षा एवं संरक्षण– **03 अंक**

पर्यावरण का अर्थ, परिभाषा एवं महत्व, मानव क्रिया.कलापों का पर्यावरण पर प्रभाव, जनसंख्या विस्फोट का पर्यावरण पर प्रभाव, प्राकृतिक आपदाओं का पर्यावरण पर प्रभाव, पर्यावरण सुरक्षा।

इकाई–6–सड़क यातायात एवं सावधानियां– **03 अंक**

यातायात नियम एवं उनके पालन की आवश्यकता, संकेतों की जानकारी एवं अर्थ, पैदल एवं वाहन चालकों द्वारा बरती जाने वाली सावधानियां और होने वाली असावधानियां, यातायात में आने वाले अवरोध, उनका निदान एवं उपचार।

इकाई–7– **03 अंक**

भारतीय संविधान में उल्लिखित नागरिकों के मूल कर्तव्य एवं उनके अनुपालन हेतु दिशा निर्देश।

इकाई–8–बाल अधिकार– **03 अंक**

जीवन संरक्षण सहभागिता, विकास का अधिकार, भारतीय संविधान में बाल अधिकार संरक्षण, शिकायत प्रणाली, बाल अधिकार संरक्षण आयोग, चाइल्ड लाइन, वीमेन पावन लाइन।

इकाई–9–बाल संरक्षण– **03 अंक**

बाल सुरक्षा, बच्चा और परिवार, अवयस्क बालक/बालिकाओं को बुरी आदतों से बचने हेतु प्रेरित करना एवं उनसे होने वाले दुष्परिणामों से अवगत कराना। हानिकारक पारम्परिक प्रथायें, बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज

प्रथा, बाल मजदूरी, वैकल्पिक देखभाल, शिक्षा का अधिकार, पीड़ित बच्चों के अधिकार, यौन उत्पीड़न, शारीरिक दण्ड, परीक्षा का बोझ, स्कूलों में बच्चों का अधिकार।

पुस्तक–''मानव अधिकार अध्ययन'' प्रकाशक माइण्डशेयर

उद्देश्य :

- ☛ विद्यार्थियों को 'योग' के लाभों से परिचित कराना और योग को उनकी दिनचर्या से जोड़ना।
- ☛ अभ्यासों एवं गतिविधियों के उत्तरोत्तर क्रम द्वारा उनका लाभ उठाकर, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पाने की सामर्थ्य का विकास करना।
- ☛ सरल विषयवस्तुओं के माध्यम से आत्मजागरण की ओर उन्मुख करना।
- ☛ किशोरवय की समस्याओं एवं रोगों को समझकर 'योग निर्देशन' एवं 'आयुर्वेदीय उपचार' आहार एवं प्राकृतिक औषध द्वारा इनका निदान करने में समर्थ बनाना।
- ☛ 'योग में जीविका के अवसर' के माध्यम से भविष्य में आजीविका के लक्ष्यों को निर्धारित करने में समर्थ बनाना।
- ☛ योगविषयक विचार एवं चिंतन को समझने की शक्ति विकसित करना।
- ☛ योग के माध्यम से विद्यार्थियों को सांस्कृतिक वातावरण एवं राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति संवेदनशील बनाना।

योग शिक्षा– **20 अंक**

1– योग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- हिरण्यगर्भशास्त्र, सांख्य एवं औपनिषदिक प्राणविद्या के सन्दर्भ में योग के ऋषि पतंजलि तथा योगसूत्र का उद्भव एवं योगदर्शन की परम्परा **2 अंक**

2–वर्तमान में योगशिक्षा का महत्व
- योग का शरीर क्रियात्मक आधार **2 अंक**
- योग एक विकासात्मक उत्प्रेरक

3–अष्टांग योग:धारणा एवं ध्यान
- **धारणा:प्रक्रिया, प्रयोजन व लाभ** **2 अंक**
- **ध्यान**
  - ☐ ध्यान : स्वरूप, परिभाषा

4–अष्टचक्र एवं पंचकोश
- **अष्टचक्र** **4 अंक**
  1. मूलाधार चक्र
  2. स्वाधिष्ठान चक्र
  3. मणिपुर चक्र
  4. हृदय चक्र
  5. अनाहत् चक्र
  6. विशुद्धि चक्र
  7. आज्ञा चक्र
  8. सहस्त्रार चक्र
- **पंचकोश**
  - ☐ पंचकोश क्या हैं?
  - ☐ अन्नमय, मनोमय, प्राणमय, विज्ञानमय, आनन्दमय

5–किशोरवय में आहार:निर्देशन
- **किशोर वय में आहार** **2 अंक**

6–अनुशासन एवं समय प्रबन्धन

अनुशासन **3 अंक**
- क्या है?
- प्रकृति में सर्वत्र अनुशासन है
- प्राणी जगत में भी अनुशासन है
- अनुशासन के लिए क्या करें–
- सामान्य उपाय
- यौगिक उपाय

समय :प्रबन्धन
- समय:प्रबन्धन की आवश्यकता एवं उपयोगिता
- यौगिक उपाय

7– दुर्व्यसनों के प्रभाव	• दुर्व्यसन क्या हैं ? • योग से दुव्यर्सनों की समाप्ति	**2 अंक**
8–योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा	• प्राकृतिक चिकित्सा क्या है? • प्राकृतिक चिकित्सा की विधियाँ एवं लाभ– 1. जल चिकित्सा 2. वाष्प चिकित्सा 3. मृत्तिकोपचार 4. वायुसेवन 5. अभ्यंग 6. आतपोपचार 7. उपवास एवं विश्रमण	**3 अंक**
	प्रयोगात्मक	**50 अंक**
1–आसन	• खड़े होकर किए जाने वाले (Standing Posture) □ ताड़ासन, तिर्यकताड़ासन, वृक्षासन–I • बैठकर किए जाने वाले (Sitting Posture) □ सुखासन।	**4अंक**
2. चन्द्र–नमस्कार	• चन्द्र–नमस्कार □ परिचय □ यौगिक दृष्टिकोण	**3 अंक**
3–मुद्रा और स्वास्थ्य	• मुद्राओं का महत्व • मुद्रा के भेद	**3 अंक**
4–बन्ध और स्वास्थ्य	• महाबन्ध	**2 अंक**
5–प्राणायाम परिचय	• उज्जायी, उद्गीथ, शीतली, सीत्कारी	**2 अंक**
6–योगनिद्रा	• योग निद्रा मनोवैज्ञानिक व्याख्या	**2 अंक**
7–त्राटक	• प्रकार □ आन्तर त्राटक, बाह्य त्राटक, मध्य त्राटक • अनिद्रा एवं त्राटक : त्राटक के उपचारात्मक अनुप्रयोग	**4 अंक**

8–निम्नलिखित स्वीकृत शारीरिक प्रक्रियाओं मे से किन्हीं 3 अथवा अधिक में नियमित अभ्यास– **30 अंक**

क्रिकेट, बेसबाल, टेनिस, टेबल टेनिस, हाकी, बैडमिन्टन, बास्केटबाल, बाक्सिंग, एथलेटिक्स, कुश्ती, जूडो ,जिम्नास्टिक, दौडना साइकिलिंग, नौका चलाना, फ्लाइन्ग, स्केटिंग, घुडसवारी, शिविर निवास, खोज यात्रा का अभियान, बागवानी, लोक नृत्य।

महापुरूषों की जीवन गाथा का अध्ययन

1-राम प्रसाद "बिस्मिल"
2- भगत सिंह
3. डा0 भीमराव अम्बेडकर
4. सरदार वल्लभ भाई पटेल
5. पं0 दीनदयाल उपाध्याय
6. महाबीर जैन
7. महामना मदन मोहन मालवीय
8 .अरविन्द घोष
9. राजा राम मोहन राय
10. सरोजनी नायडू
11. नाना साहब

12. महर्षि पतंजलि
13. शल्य चिकित्सक सुश्रुत
14. डा0 होमी जहॉगीर भाभा

राम प्रसाद बिस्मिल

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की क्रान्तिकारी धारा के प्रमुख सेनानी राम प्रसाद विस्मिल का जन्म 11 जून 1897 ई0 को उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर जिले में हुआ था। इन्होनें अपने 11 वर्ष के क्रान्तिकारी जीवन में कई पुस्तकें लिखी और प्रकाशित कराया। पुस्तकों से मिलने वाले पैसे से उन्होंने हथियार खरीदकर बिट्रिश राज्य का विरोध किया तथा 'हिन्दू रिपब्लिकन एसोसिएशन' की स्थापना की। सन 1915 ई0 में भाई परमानन्द की फाँसी का समाचार सुनकर इन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य का समूल नष्ट करने का प्रण किया। इनकी पार्टी को क्रान्तिकारी गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए धन की आवश्यकता थी जिसके लिए इन्होनें अपने साथियों के साथ लखनऊ के काकोरी नामक स्थान पर ट्रेन रोककर सरकारी खजाना लूट लिया फलस्वरूप रामप्रसाद बिस्मिल को ब्रिटिश सरकार ने गिरफ्तार करके राजद्रोह का महाभियोग लगाये और गोरखपुर की जिला जेल में 19 दिसम्बर 1927 को फांसी दे दी गयी तथा भारत माँ का वीर सपूत सदा के लिए सो गया।

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना वाजु–ए–कातिल में है।।

भगत सिंह (1907 – 1931)

भगत सिंह का जन्म 28 सितम्बर,1907 ई0 में एक सिख परिवार में हुआ था। भगत सिंह एक महान क्रान्तिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी थे। लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला, क्रान्तिकारी साथी सुखदेव व राजगुरू के साथ 'साण्डर्स' की हत्या करके लिया। भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद व पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर भारत की स्वतन्त्रता के लिए साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार से जमकर मुकाबला किया।

1929 में दिल्ली में केन्द्रीय असेम्बली में बम फेंका तथा वहाँ से जाने को मना कर दिया। उस समय उनके साथ बटुकेश्वर दत्त भी थे। 23 मार्च,1931ई0 में भगत सिंह को फाँसी दे दी गई। भगत सिंह का नाम इतिहास में हमेशा अमर रहेगा।

डॉ0 भीमराव राम जी आम्बेडकर (14 अप्रैल,1891 से 06 दिसम्बर,1956)

भारतीय संविधान के निर्माण में डॉ0 भीमराव राम जी आम्बेडकर का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्हें संविधान का निर्माता भी कहा जाता है। इनका जन्म 14 अप्रैल,1891 ई0 को महाराष्ट्र प्रान्त में हुआ था। इन्होनें 'रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इण्डिया' की स्थापना की। आप एक क्रान्तिकारी सामाजिक चिन्तक थे तथा जातिगत भेदभाव के विरूद्व थे। संविधान सभा के कार्य को सरल बनाने हेतु बनाई गयी 15 समितियों में से एक 'प्रारूप समिति' के अध्यक्ष थे स्वतन्त्र भारत सरकार में आप विधि मंत्री (1947–51) बने। आप बाबा साहब के नाम से लोकप्रिय थे। बाबा साहब विधि वेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे। आपने दलित, बौद्व आन्दोलन को प्रेरित किया और दलित समाज से सामाजिक भेदभाव के विरूद्व अभियान चलाया। सन् 1990 ई0 में इन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान **'भारत रत्न'** से विभूषित किया गया।

सरदार वल्लभभाई पटेल

सरदार पटेल के नाम से लोकप्रिय वल्लभभाई झवेरभाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1857 को हुआ था। उन्होंने महात्मा गाँधी से प्रेरित होकर स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया। उन्होंने 1917 में खेड़ा संघर्ष में किसानों का नेतृत्व किया तथा उन्हें अंग्रेजों को कर न देने के लिये प्रेरित किया। यह आन्दोलन सफल हुआ। यह स्वतंत्रता आन्दोलन में उनका प्रथम योगदान था। तत्पश्चात् 1928 में बारदोली किसान संघर्ष में उनकी अभूतपूर्व भूमिका के कारण आन्दोलन की सफलता के पश्चात् वहाँ की महिलाओं ने उन्हें 'सरदार' की उपाधि दी। वह भारत के पहले उप–प्रधानमंत्री थे। भारत के गृहमंत्री के रूप में उनकी पहली प्राथमिकता देशी रियासतों का भारत में विलय था। उन्होंने 562 छोटी–बड़ी रियासतों को भारतीय संघ में मिलाया। भारत के एकीकरण में उनके महान योगदान के लिये उन्हें 'भारत के लौहपुरुष' के रूप में जाना जाता है। वह एक कुशल कूटनीतिज्ञ थे। वह वर्णभेद तथा वर्गभेद के प्रबल विरोधी थे। उनका निधन 15 दिसम्बर,1959 को हुआ। सन् 1991 में उन्हें भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान **'भारत रत्न'** प्रदान किया गया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म राजस्थान में जयपुर धनकिया में 25 सितम्बर,सन् 1916 ई0 में हुआ था। सन् 1947ई0 में उन्होंने राष्ट्रधर्म पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। राष्ट्रधर्म प्रकाशन में प्रबंध निदेशक रहते हुए भी प्रेस का छोटे से छोटा काम करने में वह हिचकते नहीं थे। सन् 1951 ई0 में राजनीति में आने के बाद वह भारत में सामाजिक समरसता के प्रबल पक्षकार बन गए। दीनदयाल जी मानते थे कि यदि समाज में छुआछुत और भेदभाव व्याप्त कर गया तो यह राष्ट्र की एकता के लिए घातक होगा। एकात्म मानववाद के प्रवर्तक दीनदयाल ने ऐसे राष्ट्र की कल्पना किया, जहाँ विविध संस्कृतियाँ विकसित हो और एक ऐसे मानवधर्म का सृजन हो, जिससे समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समय, अवसर और स्वतन्त्रता प्राप्त हो सके। स्वदेशी वस्तुओ के प्रयोग के प्रति उनका आग्रह बड़ा प्रबल था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीयता का आधार भारत माता को मानते थे। वह कहते थे भारत माता से माता शब्द हटा देते ही भारत केवल भूखंड रह जाएगा। देशवासियों का स्नेह तो माता वाले संबंध से ही जुड़ता है।

महावीर स्वामी (599 ईसा पूर्व – 527 ईसा पूर्व)

महावीर स्वामी का जन्म 599 ईसा पूर्व में बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के वैशाली के निकट कुण्ड–ग्राम में हुआ था। इनके बचपन का नाम वर्धमान था। इनके पिता का नाम सिद्धार्थ तथा माता का नाम त्रिशला अन्य नाम विदेहदत्ता था। 12 वर्ष की कठोर तपस्या के पश्चात् ऋजुपालिका नदी के किनारे इन्हें 'कैवल्य' ज्ञान प्राप्त हुआ। 527 ईसा पूर्व आपको निर्वाण प्राप्त हुआ।

महावीर स्वामी धार्मिक और वैचारिक क्रान्ति के अग्रदूत थे। इस समय (लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व) भारतीय जनमानस खर्चीले कर्मकाण्डों, अन्धविश्वासों, पशुबलि ब्राहमणों का प्रभुत्व और छोटी जातियों के प्रति अमानवीय व्यवहार से व्यथित था। ऐसी परिस्थिति में जनमानस ने एक सहज सरल कर्मकाण्डों से मुक्त धर्म का स्वागत किया।

जैन धर्म ने अपनी शिक्षाओं कों (1) पँच महाव्रत, (2) अहिंसा, सत्य, अस्तेय अपरिग्रह ब्रहमचर्य (3) सम्यक चरित्र, (4) अनेकान्तवाद (5) स्यादवाद (6) कर्म में विश्वास (7) पुनर्जन्म में विश्वास (8) आत्मा की सत्ता में विश्वास तथा सल्लेखना में व्याख्यायित किया है।

मदन मोहन मालवीय

मालवीय महान राजनेता, स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद तथा 2014 में भारत रत्न से अलंकृत होने वाले मदन मोहन मालवीय का जन्म 25 दिसम्बर 1861 को इलाहाबाद में हुआ था। इनके पिता का नाम पं० बैजनाथ और माता का नाम मीना देवी था। 1886 ई0 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़ने के बाद इनका सम्पूर्ण जीवन राष्ट्रसेवा में समर्पित रहा। 1909 और 1918 में इन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया। राष्ट्र को जागरूक करने और राष्ट्रीय भावना की एकता को मजबूत करने के लिए इन्होनें़ 'अभ्युदय' हिन्दुस्तान एवं इण्डियन यूनियन का सम्पादन किया। 'स्वदेशी' शब्द का प्रयोग भी इनके द्वारा ही सर्वप्रथम किया गया। 'अखिल भारतीय हिन्दू महासभा', 'भारतीय औद्योगिक सभा' उ0प्र0 औद्योगिक सभा के साथ–साथ इनके द्वारा उच्च शिक्षा का कीर्ति स्तम्भ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी। समाज एवं राष्ट्र की सेवाओं से प्रभावित होकर डॉ0 सम्पूर्णानन्द ने 'महामना' और महात्मा गाँधी ने 'भिखारियों का राजा' की उपाधि प्रदान की। 1964 ई0 में अनुकरणीय और अक्षुण्ण राष्ट्रभक्त मदन मोहन मालवीय की मृत्यु हो गयी।

अरविन्द घोष

अरविन्द घोष या श्री अरविन्द घोष एक योगी एवं दार्शनिक थे। इनका जन्म 15 अगस्त 1872 को कलकत्ता मे हुआ था। इनके पिता का नाम कृष्णधन तथा माता का नाम स्वर्णलता था। 7 वर्ष की आयु में ही उच्च शिक्षा के लिए इन्हें इंग्लैड भेज दिया गया। 18 वर्ष की आयु मे ही आई0सी0एस0 की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। उन्होने अग्रेजी, जर्मन, फेंच, ग्रीक एवं इटैलियन भाषाओ मे भी निपुणता प्राप्त की थी। वेद उपनिषद आदि ग्रन्थो पर टीका लिखी थी। योग साधना पर मौलिक ग्रन्थ लिखे थे। श्री अरविन्द दर्शन शास्त्र के अच्छे विद्धान थे।

संस्कृत के साथ–साथ अन्य भारतीय भाषाओ का ज्ञान प्राप्त किया तथा हिन्दू धर्म संस्कृति तथा अध्यात्मवाद का गहन अध्ययन किया।

कैम्ब्रिज मे अध्ययन के दौरान श्री अरविन्द '**इंडियन मजलिस**' नामक संस्था के संपर्क में आए और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के भाषण दिये।

इन्होने एक गुप्त संस्था '**लोटस एण्डडैगर**' बनाई जिसमें कुछ भारतियो युवक शामिल थे, जिन्होने स्वतंत्रता के लिए काम करने की प्रतिज्ञा की इन्होने भारतीय राजनीति को नई दिशा दिया था। दैनिक पत्रिका '**वंदेमातम्**' के माध्यम से ब्रिटिश सरकार का विरोध किया एवं देश वासियों को जागरूक किया। राष्ट्रीय आन्दोलन के चार मुख्य उद्देदश्य **स्वराज, स्वदेश, बहिष्कार तथा राष्ट्रीय शिक्षा** की पूर्ति के लिए काम किया।

अरविन्द जी को नोबेल का साहित्य पुरस्कार **(1943)** और नोबेल का शांति पुरस्कार **(1950)** के लिए भी नामित किया गया था। श्री अरविन्द आश्रम '**औरोविले**' के संस्थापक थे। 1950 मे इनका निधन हो गया।

राजा राममोहन राय

आधुनिक भारत के जनक पुनर्जारण के अग्रदूत राजा राममोहन राय का जन्म 22 मई, 1772 ई0 में हुआ था। भारतीय सामाजिक और धार्मिक पुनर्जारण के क्षेत्र में उनका प्रमुख स्थान है। उन्हें अरबी, फारसी, संस्कृत और बंगला भाषा का ज्ञान था। 1809 ई0 में उन्होंने ईस्ट इण्डिया कम्पनी में काम करना शुरू किया परन्तु देश की सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक कुरीतियों से द्रवित हो कर इन्होनें 1814 ई0 में नौकरी छोड़ कर स्वयं को राष्ट्र सेवा में लगा दिया तथा बालविवाह, सतीप्रथा, जातिवाद, परदाप्रथा, धार्मिक कर्मकाण्ड जैसी बुराईयों का पुरजोर विरोध किया। 1828 ई0 में ब्रह्मसमाज की स्थापना की। कुरीतियों का विरोध करने के साथ–साथ उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा, आधुनिक चिकित्सा पद्वति, प्रौद्योगिकी और विज्ञान को बढ़ावा देने का भी समर्थन किया। 'संवाद कौमुदी,' 'बंगदूत' जैसी पत्रिका के सम्पादन के माध्यम से समाज को लगातार जागरूक करने का प्रयत्न किया। मुगल सम्राट अकबर द्वितीय के द्वारा इन्हें राजा की उपाधि दी गयी थी। 27 सितम्बर,1833 ई0 में इनकी मृत्यु हो गयी।

सरोजनी नायडू

सरोजनी नायडू का जन्म 13 फरवरी, 1879 ई0 को हैदराबाद में हुआ था। पिता अघोर नाथ चट्टोपाध्याय तथा माता वरदासुंदरी की कविता लेखन में विशेष रूचि थी।

सरोजनी नायडू ने हिन्दू–मुस्लिम एकता पर जोर दिया। उन्होंने अशिक्षा, अज्ञानता और अंधविश्वास को दूर करने के लिए लोगों से निवेदन की। उनका कहना था – 'देश की उन्नति के लिए रूढ़ियों', परम्पराओं, रीति–रिवाजों के बोझ को उतार फेंकना होगा।'

1925 ई0 में जब वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष चुनी गयीं तो गाँधी जी ने उत्साह भरे शब्दों में उनका स्वगात किया और कहा "पहली बार एक भारतीय महिला को देश की सबसे बड़ी सौगात मिली है।"

1942 ई0 में गाँधी जी के भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने भाग लिया। आजादी की लड़ाई में उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। अन्ततः भारत को पूर्ण स्वतंत्रता मिली। सरोजनी नायडू उत्तर प्रदेश की राज्यपाल बनीं।

मार्च, 1949 को भारत कोकिला सदा के लिए मौन हो गयीं। जवाहर लाल नेहरू ने उस समय कहा था "सरोजनी नायडू ने अपनी जिन्दगी एक कवयित्री के रूप में शुरू की थी। कागज और कलम से उन्होंने कुछ ही कविताएँ लिखी थीं लेकिन उनकी पूरी जिन्दगी एक कविता एक गीत थी सुन्दर मधुर कल्याणमयी। "

नाना साहेब

नाना साहेब सन् 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के शिल्पकार थे। उनका मूल नाम 'धोन्धोपन्त' था। इनका जन्म सन् 1824 में कानपुर के बिठूर में हुआ। इनके पिता नारायण भट पेशवा बाजीराव द्वितीय के सगोत्र भाई थे तथा माता का नाम गंगा बाई था। पेशवा ने नाना साहेब को अपना दत्तक पुत्र स्वीकार किया और उनकी शिक्षा दीक्षा का प्रबंध किया। उन्हें हाथी घोड़े की सवारी तलवार, बंदूक चलाना तथा कई भाषाओं का ज्ञान था।

सन् 1851 में पेशवा के स्वर्गवास के पश्चात् उन्हें पेशवा का उत्तराधिकारी घोषित किया गया। नाना साहेब के शासनकाल में पूणे शहर में अनेकों मंदिरों पुलों आदि की स्थापना की गई। उन्होंने कटराज शहर में एक जलाशय का निर्माण करवाया। शिवाजी के शासनकाल के बाद नाना साहेब सबसे प्रभावशाली शासकों में से एक थे। उन्होंने ब्रिटिश सरकार के समक्ष पेशवाई पेंशन चालू करने की मांग की परंतु उनकी मांग अस्वीकार कर दी गई, इसके पश्चात् नाना साहेब के मन में अग्रेंजों के खिलाफ रोष उत्पन्न हो गया।

सन् 1857 में जब मेरठ से क्रांति का श्रीगणेश हुआ तो नाना साहेब ने तात्या टोपे के साथ मिलकर बड़ी वीरता और दक्षता से क्रांतिकारी सेनाओं का कुशल नेतृत्व किया और अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह कर कानपुर पर पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा की।

1857 में नाना साहेब ने अपने साथियों के साथ कानपुर के कमांडिंग आफिसर जनरल व्हीलर और उनके सैनिकों पर सतीचौरा घाट पर आक्रमण कर दिया। इस घटना के पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने बिठूर पर हमला कर दिया और अंग्रेजों से बचने के लिये नाना साहेब नेपाल चले गए।

महर्षि पतंजलि

भारतीय दार्शनिकों का परम लक्ष्य प्राणियों के त्रिविध दुःखों की ऐकान्तिक और आत्यन्तिक निवृत्ति करना है। इन तीन प्रकार के दुःख की निवृत्ति के लिए सभी आस्तिक और नास्तिक दर्शन मतावलम्बी अपने–अपने उपाय भी बताते है। इसी उपाय को महर्षि पतंजलि ने अपने 'योगसूत्र' मे भी बताया है। आचार्यवर्य ने दुःख के दूरीकरण मे 'योग' को उपाय के रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होने योग को परिभाषित करते हुए कहा कि– 'योगश्चिन्तवृत्तिनिरोधः' अर्थात् योग चित्त–वृत्तियों का निरोध है। पतंजलि योगसूत्र के व्यासभाज्य में योग को समाधि कहा गया है (योगः समाधिः)। अगर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी योग की महत्ता पर विचार किया जाय तो यह निश्चित रूप से स्पष्ट हो जायेगा कि योग आज भी प्रासगिंक है। इसीलिए प्रत्येक वर्ष 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है।

लोक में सम्प्रेषण के लिए शब्द का ज्ञान भी आवश्यक है। इसीलिए महर्षि पतंजलि ने 'महाभाष्य' का प्रणयन कर, अष्टाध्यायी में अस्पष्ट सिद्धान्तों को स्पष्ट रूप में परिभाषित किया। व्याकरण महाभाष्य के माध्यम से शब्द और ध्वनि में अन्तर को बहुत ही सुस्पष्ट रूप में समझा जा सकता है। व्याकरण ही वह साधन है, जिसके द्वारा किसी भी शब्द को शुद्ध रूप में उद्यरित किया जा सकता है।

इस प्रकार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में 'पतंजलि योगसूत्र' तथा व्याकरण 'महाभाष्य' आज भी प्रासगिंक है। इसलिए महर्षि पतंजलि की उपादेयता आधुनिक युग में भी विद्यमान है।

आचार्य सुश्रुत

आचार्य सुश्रुत एक उच्चकोटि के आयुर्वेदाचार्य एवं शल्य–चिकित्सक थे। इन्होंने अपने ग्रन्थ 'सुश्रुत संहिता' में अपने वंश का स्पष्ट परिचय दिया है। तदनुसार आचार्य सुश्रुत महर्षि विष्वामित्र के पुत्र थे और इन्होंने धन्वन्तरि जी से शल्य–शास्त्र की शिक्षा ग्रहण की थी।

मन एवं शरीर को पीड़ित करने वाली वस्तु को 'शल्य' कहा जाता है और इस शल्य को निकालने–वाले साधन यन्त्र कहलाते हैं। (तत्र मनः शरीरबाधकराणि शल्यानि, तेषामाहरणोपायो यन्त्राणि)

आचार्य सुश्रुत ने अपने ग्रन्थ में सौ से भी अधिक शल्य–शस्त्रों का वर्णन किया है। जैसे–1. अस्थियॉं बाहर खींचने के लिए एवं भीतर बैठाने के लिए बाहर से मालिश करना आदि विभिन्न क्रियायें अस्थिरोगों के विषय में अति आवश्यक है। 2. अस्थि मिलाने (जोड़ने) के लिए बॉस की पट्टियॉं इस्तेमाल करनी चाहिए। 3. व्रणों (घावों) के अनेक प्रकार होते हैं और उनकी उपचार पद्धति भी भिन्न–भिन्न होती है 4. मष्तक और चेहरे पर घाव (जख्म) होने पर वहॉं सुई से टाके लगाने चाहिए।

आचार्य सुश्रुत त्वचारोपण तन्त्र में भी अति निष्णात थे। ऑखों के मोतियाबिन्द (कटेरेक) निकालने की सरल कला के वे विशेषज्ञ थे। इसी प्रकार यदि मातृ–गर्भ से शिशु योग्य मार्ग से न आता हो तो मातृ–गर्भस्थ शिशु को निर्विघ्न बाहर निकालने के विविध प्रकार सुश्रुत अच्छी तरह जानते थे।

वर्तमान में ऑपरेशन (सर्जिकल) के लिए जिन–जिन यन्त्रों का उपयोग होता है, उसका विवरण भी 'सुश्रुतसंहिता' में है।

एवंविध आचार्य सुश्रुत को आयुर्वेद एवं शल्य चिकित्सा के अत्याधुनिक विधियों का पूर्व में ही ज्ञान था, तभी तो आधुनिक युग में भी शल्य चिकित्सा में 'सुश्रुत संहिता' को आधार माना जाता है।

डॉ0 होमी जहांगीर भाभा

डॉ0 होमी जहांगीर भाभा का जन्म 30 अक्टूबर 1909 को मुम्बई में हुआ था। उन्हें "भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम का जनक" कहा जाता है। भाभा शुरू से ही भौतिक विज्ञान और गणित में खास रुचि रखते थे। 12वीं की पढ़ाई एल्फिस्टन कालेज मुम्बई से करने के पश्चात् उन्होने रॉयल इंस्टीट्यूट आफ सांइस से बी.एस.सी. की परीक्षा पास की और आगे की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड चले गए और वहां उन्होने कैम्बिज विश्वविद्यालय से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की परीक्षा पास की। वर्ष 1933 में डाक्टरेट की उपाधि से पहले भाभा ने अपना रिसर्च पेपर "द अब्जार्वेशन आफ कॉस्मिक रेडिएशन" शीर्षक से जमा किया जिसके लिए उन्हें वर्ष 1934 में "आइजेक न्यूटन स्टूडेटशिप" भी मिली।

डॉ भाभा अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद वर्ष 1939 में भारत लौट आए। बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ होमी जहांगीर भाभा की शास्त्रीय संगीत, मूर्तिकला, चित्रकला और नृत्य के क्षेत्र में गहरी रुचि और पकड़ थी। 1948 में डॉ भाभा ने भारतीय परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना की एवं वर्ष 1957 में भारत ने मुम्बई के करीब ट्राम्बे में पहला परमाणु अनुसंधान केंन्द्र स्थापित किया। जिसे बाद में भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र का नाम दिया गया। 18 मई 1974 को भारत ने पोखरण में पहला भूमिगत परमाणु परीक्षण किया।

डॉ0 होमी जहांगीर भाभा ने भारत को परमाणु शक्ति सम्पन्न बनाने का जो सपना देखा था वह अपने विस्तृत स्वरूप में आगे बढ़ रहा है। 24 जनवरी 1966 को एक विमान दुर्घटना में भारत के इस प्रमुख वैज्ञानिक और स्वपनद्रष्टा की मृत्यु हो गई।